जीव रे चतुरमुख को छोड़त नाहीं, जो करता सृष्ट केहेलाए।
चारों तरफों चौदे लोकों, काल पोहोंच्यो आए।। ४ ।।

सृष्टि को बनाने वाले चतुर्मुखी ब्रह्मा को भी काल नहीं छोड़ता। यहां चारों तरफ चौदह लोकों में काल का ही पसारा है जो किसी को छोड़ता नहीं।

पवन पानी आकास जिमी, ज्यों अगिन जोत बुझाए।
अवसर ऐसो जान के, तूं प्राणपति लौ लाए।। ५ ।।

हवा, पानी, आकाश, पृथ्वी तथा अग्नि पांचों तत्व समाप्त हो जाते हैं, इसलिए तेरे हाथ अवसर आया है, उसे पहचान कर अपने प्राणपति प्राणनाथ से चित्तवृत्ति लगा ले।

देखन को ए खेल खिन को, लिए जात लपटाए।
महामत रुदे रमे तासों, उपजत जाकी इछाए।। ६ ।।

कहने को तो यह संसार एक क्षण का है, परन्तु सब इसी में लिपटे चले जा रहे हैं। महामतिजी कहते हैं, हे मेरे जीव! जिस पारब्रह्म की प्रेरणा से यह खेल बना है तू उसको अपने हृदय में बसा ले।

॥ प्रकरण ॥ ४८ ॥ चौपाई ॥ ५०६ ॥

राग देसाख

बाई रे वात अमारी हवे कोण सुणें, अमें गेहेलाने मलया।
एहनो नेहडो सुणीने हूं तो घणुऐं नाठी, पणसूं कीजे जे पांणें पड्या।। १ ।।

हे बहन! यहां अब हमारी बात को कौन सुनेगा? मुझे दीवाने प्रीतम मिले हैं। यह नेह लगाने में बड़े चतुर हैं। ऐसा सुनकर मैं पीछा छुड़ाने के लिए भागी, पर क्या करूं? यह तो मेरे पीछे ही पड़ गए हैं।

हूं मां हुती चतुराई त्यारे पांचमां पुछाती, ते चितडा अमारा चलया।
मान मोहोत लज्या गई रे लोपाई, अमें माणस माहें थी टलया।। २ ।।

यदि मेरे अन्दर भी इनकी तरह चतुराई होती तो मैं लोगों से इसकी जानकारी लेती। इन्होंने तो मेरे चित्त को हरण करके मेरी मान-मर्यादा और लोक-लाज को ही हटा दिया है। इससे मैं मानव संसार से ही अलग हो गई हूं।

माणस होए ते तो अमने मां मलजो, जो तमे गेहेलाइए हलया।
ओल्या वार से वढसे खीजसे तमने, तोहे आवसो ते आंहीं पलया।। ३ ।।

जो अपने आपको सांसारिक मानव समझते हों वह मुझे मत मिलें। मेरे धनी का दीवानापन जिसको भाए, वह मेरे साथ आ जाए। तुम्हारे ऐसे करने के लिए सांसारिक लोग तुम्हें मना करेंगे, लड़ेंगे, झगड़ेंगे, फिर भी तुम हमारे ही पास आओगे।

गेहेले वालें अमने कीधां गेहेलडा, मलीने गेहेलाइए छलया।
जात कुटमथी जूआ थया, हद छोडी वेहदमां भलया।। ४ ।।

दीवाने प्रीतम ने मुझे भी दीवाना बना दिया है। इस तरह से दीवाने प्रीतम ने मुझे अपने वश में कर लिया है। अब मैं जाति, कुटुम्ब और परिवार वालों से अलग हो गई हूं तथा संसार को छोड़कर बेहद के पार प्रीतम से मिल गई हूं।

Nijanand App

देखीतां सुखड़ा में तो नाख्या उडाडी, दुस्तर दुखें न बलया।
एहेनी गेहेलाइए अमने एवा कीधां, जईने अछरातीतमां गलया।। ५ ।।

संसार के सुखों को देखते ही मैंने छोड़ दिया। कठिन दुःखों से घबराई नहीं। इनके दीवानेपन ने मुझे ऐसा बना दिया कि मैं अक्षरातीत में मग्न हो गई।

बाई रे गिनान सब्द गम नहीं नवधाने, वेद पुराणें नव कलया।
ए वात गेहेलड़ी करे रे महामती, मारे अखंड सुख फूले फलया।। ६ ।।

हे सखी! उस अक्षरातीत को पाने के लिए संसार के ज्ञान के शब्द नहीं पहुंचते। नवधा भक्ति नहीं पहुंचती। वेद-पुराण भी कुछ नहीं कह सके। महामतिजी कहते हैं कि इस दीवानेपन से मुझे अखण्ड सुखों का आनन्द मिलने लगा।

।। प्रकरण ।। ४९ ।। चौपाई ।। ५१२ ।।

बाई रे गेहेलो वालो गेहेली वात करे रे, एहने कोई तमें वारो।
दुरजन देखतां अमने बोलावे, निलज ने धुतारो।। १ ।।

हे सखी! मेरे दीवाने प्रीतम दीवानगी की ही बातें करते हैं। इन्हें कोई समझाओ। घर, कुटुम्ब, परिवार वाले तथा बुरी दृष्टि वालों के सामने ही यह निर्लज्ज छलिया मुझे बुलाते हैं।

नित उठी आंगनडे ऊभो, आलज करे अमारी।
लोक माहें अमें लज्या पामूं, हूं कुलवधुआ नारी।। २ ।।

यह नित्य प्रातः उठते ही मेरे आंगन में आकर खड़े हो जाते हैं और मुझसे छेड़छाड़ करते हैं। संसार के बीच में कुलवन्ती (कुलीन) नारी होने के कारण मुझे शर्म लगती है।

नासंती क्यांहें न छूटूं ए थी, आड़ज बांधे आवी।
हूं जांणूं रखे सासुडी सांभले, थाकी कही केहेवरावी।। ३ ।।

इनसे छूटकर कहीं मैं जा नहीं सकती। यह मेरा रास्ता रोककर खड़े हो जाते हैं? मेरी सासजी कहीं सुन न लें, ऐसा कह-कहकर और कहलवाकर मैं थक गई।

वारतां वलगतां वाले, जोरे सांईड़ा लीधां।
कहे महामती सुणो रे सखियो, वाले एणी पेरे गेहेलडा कीधां।। ४ ।।

मेरे रोकने पर भी वालाजी आकर लिपट गए और जबरदस्ती मुझे लिपटा लिया अर्थात् अपना बना लिया। महामतिजी कहते हैं सखियो! सुनो, वालाजी ने इस तरह से मुझे भी दीवाना बना दिया है।

।। प्रकरण ।। ५० ।। चौपाई ।। ५१६ ।।

राग धनाश्री

आज वधाई वृज घर घर, प्रगटया श्री नंदकुमार।
दूध दधी ऊमर धोए, तोरण बांधे वृजनार।। १ ।।

नन्दजी के घर नन्दकुमार के प्रगट होने से बृज में घर-घर बधाई बज रही हैं। बृज की नारियां दूध और दही से घर के दरवाजे और चौखट को धोकर तोरण (वन्दनवार) बांधती हैं।

Nijanand App